मैथिली (सामान्य) प्रकरण - 'सूर्यमुखि कविता संग्रह' बसंत कुमार
बी० ए० (ज) पार्ट-१ सप्रसंग व्याख्या करु अतिथि शिक्षक
Notes
दिनांक 23-[redacted]-2020

आइ प्रात करऽ लागल, अछि मनोरथ - भ्रमर गुंजन!
मोर-मन नाचऽ हमर, लागल अकारण धोरि आंगन।
शीतसँ भयभीत छलजे, प्राण शीतल भेल सुरकल,
आइ खंजन - खग जकाँ, सर्वत्र ठुमकै अछि निचं-
चल।

प्रस्तुत पद्यांश महाकवि आरसी प्रसाद सिंह रचित सुर्यमुखी कविता संग्रहक अरुणोदय शीर्षक कवितासँ लेल गेल अछि। कवि आरसी बाबू प्रकृति प्रेमी छलाह। प्रकृति द्वारा सृष्टिक निर्माण आ ओकर सौन्दर्यक वर्णन ओ अपन काव्यमे अत्यन्त रोचक ढंगसँ केने छथि।

प्रस्तुत पंक्तिमे प्रात: कालमे भगवान भास्कर कैं उदयकालीन समयक वर्णन अछि। जखन सुर्योदय होइत अछि त' फुल पर भँवराक गुंजन अत्यंत मनोहारि होइत अछि। ई देखि कविक मन मयूर जेका फुदकय लगैत छनि। वास्तवमे जाड़क समयमे सूर्यक किरण बरि प्रियगर। नीक लगैत अछि। जाड़सँ शरीरमे जे कष्ट होइत अछि, ताहिसँ प्राण शुरकल रहैत अछि। जखन जाड़क प्रचंडता रहैत अछि तखन समस्त जीव-जन्तु अपन-अपन गृहमे दबकल रहैत अछि। मुदा सुर्यक किरण जखन स्पर्श होइत छनि त' खजन चिड़ियाक सदृश्य सभ ठाम घुमैत रहैत अछि। कवि प्रकृति प्रेमी छाथि तें अपन कवितामे प्रकृति आ जीवनक वर्णन रोचकतासँ केने छथि।